पाठ्यक्रम इस ...
सामंजस्य उत्पन्न होता है।

डॉ० जाकिर हुसैन का विचार था कि समय-समय पर पाठ्यक्रम में परिवर्तन होना चाहिये, क्योंकि किसी भी सिद्धान्त को स्थायी मानना दोषपूर्ण है। डॉ० जाकिर हुसैन ने पाठ्यक्रम में उपयोगितवादी दृष्टिकोण को अपनाया है।

TOPIC- शिक्षण सिद्धान्त (Principle of Teaching)

Sc-101, S.B. Chaudhary, 11/08/21

डॉ० जाकिर हुसैन पर अनेक शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों के विचारों विशेषकर रूसो का प्रभाव पड़ा, जिसके कारण इन्होंने प्रचलित पुस्तकीय शिक्षा का घोर विरोध किया। उनका कथन था कि इस शिक्षा द्वारा बालक की प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता है, न ही उसका मानसिक विकास सम्भव हो पाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालक को निष्क्रिय श्रोता बनाती है। अतः डॉ० जाकिर हुसैन ने निम्नलिखित शिक्षा सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं—

1. अनुभव के आयोजनों के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण,
2. मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण,
3. क्रियात्मकता एवं मनन के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण,
4. स्वमूल्यांकन सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण।

उपरोक्त सिद्धान्त के आधार पर डॉ० जाकिर हुसैन ने प्रकृति से अनुकूलन, स्वाभाविक योग, अन्वेषण द्वारा शिक्षण विधियों के प्रयोग और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा पर बल या।

अध्यापक का कार्य भाग (Role of Teacher)

डॉ० जाकिर हुसैन अध्यापक को प्रेम, सहिष्णुता, त्याग की प्रतिमूर्ति माना। बाल... शिक्षक का ही योग होता है। डॉ० जाकिर हुसैन ने

2. **आध्यात्मिक लक्ष्य**—डॉ० जाकिर हुसैन ने शिक्षा का मुख्य लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नयन माना है, जिसकी पूर्ति व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता और दृढ़ता द्वारा सम्भव है और जो पूर्णतया शाश्वत मूल्यों, आदर्शों और सांस्कृतिक उपलब्धियों से होती है।

डॉ० जाकिर हुसैन ने राष्ट्रीय शिक्षा को विशेष रूप से महत्व दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रीय एकीकरण सम्भव है।

पाठ्यक्रम
(CURRICULUM)

डॉ० जाकिर हुसैन ने बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत पाठ्यक्रम की जो रूपरेखा प्रस्तुत की है। वह विशेष रूप से प्रारम्भिक शिक्षा तक ही सीमित है। पाठ्यक्रम में उन्होंने पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा क्रिया प्रधान शिक्षा को महत्व दिया। उन्होंने पाठ्यक्रम में हस्त उद्योग के उपयोग को विशेष बल दिया। इसका उद्देश्य यह था कि बालक में इसके द्वारा इतनी कुशलता आ जाये कि वह आवश्यकता पड़ने पर आत्मनिर्भर भी हो सके। उन्होंने पाठ्यक्रम इस प्रकार निश्चित किया, जिससे विद्यालय, घर और समाज के जीवन में सामंजस्य उत्पन्न होता है।

डॉ० जाकिर हुसैन का विचार था कि समय-समय पर पाठ्यक्रम में परिवर्तन होना चाहिये, क्योंकि किसी भी सिद्धान्त को स्थायी मानना दोषपूर्ण है। डॉ० जाकिर हुसैन ने पाठ्यक्रम में उपयोगितवादी दृष्टिकोण को अपनाया है।

शिक्षण सिद्धान्त
(Principle of Teaching)

डॉ० जाकिर हुसैन पर अनेक शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों के विचारों विशेषकर रूसों का प्रभाव पड़ा, जिसके कारण उन्होंने प्रचलित पुस्तकीय शिक्षा का घोर विरोध किया। उनका कथन था कि इस शिक्षा द्वारा बालक की प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता है, न ही उसका मानसिक विकास सम्भव हो पाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालक को निष्क्रिय श्रोता बनाती है। अतः डॉ० जाकिर हुसैन ने निम्नलिखित शिक्षा सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं—

1. अनुभव के आयोजनों के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण,
2. मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण,
3. क्रियात्मकता एवं मनन के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण,
4. स्वमूल्यांकन सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण।

उपरोक्त सिद्धान्त के आधार पर डॉ० जाकिर हुसैन ने प्रकृति से अनुकूलन, स्वाभाविक प्रयोग, अन्वेषण द्वारा शिक्षण विधियों के प्रयोग और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा पर बल दिया।

अध्यापक का कार्य भाग
(Role of Teacher)

डॉ० जाकिर हुसैन अध्यापक को प्रेम, सहिष्णुता, त्याग की प्रतिमूर्ति माना। बालक के विकसित व्यक्तित्व को बनाने में शिक्षक का ही योग होता है। डॉ० जाकिर हुसैन ने